फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 278 1/- अगस्त 2011

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

कोई कर दे, कोई करवा दे, या फिर तालमेल

समुदाय में टूटन से, विकृति से "मैं" का उदय हुआ। यह मुख्यतः पुरुष थे जो "मैं" के वाहक बने। जन्म के पश्चात मृत्यु की निश्चितता में "मैं" की अथाह पीड़ा छिपी है। पुरुष का "मैं" नर और नारी के बीच कटु रिश्तों का आधार बना। इधर मण्डी-मुद्रा नारियों को भी "मैं" के वाहक बना कर कटु सम्बन्धों के लिये परिवार जैसे स्थानों को सिकोड़ रही है। व्यक्ति, अकेले-अकेले व्यक्ति मण्डी-मुद्रा की चाहत हैं। "मैं" का होना ही व्यक्ति और समाज के बीच शत्रुतापूर्ण रिश्ते लिये होता है। बिगड़ते हुये समुदायों के आरम्भिक दौर में ही व्यक्ति की समाज के सम्मुख स्थिति गौण थी। इस कारण एक तरफ जन्म को ही पतन मान कर जीवन से मुक्ति के प्रयास तो दूसरी तरफ विश्व विजय के लिये रक्तपात। इधर "मैं" का, व्यक्ति का महिमामण्डन करती मण्डी-मुद्रा के इस संस्था-कम्पनी चरण में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर-सा हो गया है। ऐसे में "मेरे बस का नहीं है" स्थिति का सही मूल्यांकन है। लेकिन, अपने से इस-उस बात में उन्नीस-इक्कीस वालों को यह-वह खूबी प्रदान कर समाधान-कर्ता बनाना स्वयं को धोखा देने के अलावा और कुछ नहीं है।

यहाँ हम चर्चा को फैक्ट्री मजदूरों के दायरे में सीमित रखेंगे।

*कमाने आये हैं......12-16-20 घण्टे रोज काम। हफ्ते में सातों दिन ड्युटी। आठ बाई आठ कमरे में दो-तीन-चार का साथ रहना। परिवार साथ में तो कर्ज हाथ में।

कमाते हैं..... बीमारी। अकेलापन। चिड़चिड़ापन। हाथ-पैर गँवाना। असमय मृत्यु।

यह बातें सब फैक्ट्री मजदूर जानने लगते हैं। और, जानते हुये स्वयं को धोखा देने के प्रयास करते रहते हैं..... यह मेरे साथ नहीं होगा।

ऐसे में, सामान्य से परे जब भी कुछ होता है तब-तब अपने बस का नहीं है निपटना, कोई अन्य ढूँढते हैं। कोई कर दे, कोई करवा दे वालों को ढूँढने के प्रयासों में कमी नहीं रही है। बहुतों को, अनेक रंग-रूप वालों को आजमा चुके हैं। हालात बद से बदतर होती आई हैं..... याद कीजिये आठ घण्टे की इतनी दिहाड़ी कि परिवार का भरण-पोषण हो और आज की वास्तविकता कि 12 घण्टे ड्यूटी में एक का गुजारा मुश्किल।

*लफड़े में नहीं पड़ना है...... पड़ोसियों से चर्चा करने से बचना। अन्य फैक्ट्रियों से क्या वास्ता है? दूसरे मजदूरों से क्या लेना-देना है? यूँ भी, थके तन-मन-मस्तिष्क के टेलीविजन माफिक है।

जबकि, हमारा होना ही अपने आप में लफड़ा है। दुकानदारों से लफड़े, मकानमालिक से लफड़ा, ड्यूटी जाते-आते रास्ते में लफड़े, सुपरवाइजर-मैनेजर से लफड़े, साथ काम करने वालों के साथ लफड़ा, साथ रहने वालों से लफड़े.....

कमाने आये हैं, लफड़े में नहीं पड़ना, कोई कर दे, कोई करवा दे पर नये सिरे से विचार करना बनता है।

*आज जो सामान्य है उसमें छोटे झटके, बड़े झटके, बहुत-ही बड़े झटके लगते रहते हैं और अत्यन्त विनाशकारी झटकों की सम्भावनायें बढती जा रही हैं।

अपने बस के नहीं हैं..... और कोई करने वाले नहीं हैं....... तीन-चार हजार वर्ष के दौरान वाले चमत्कारों के नतीजे हमारे सामने हैं फिर भी अवतार-मसीहा की ही आस। असहायता के, निराशा के इस बोलबाले से निकलना जरूरी है। कैसे निकलें?

फैक्ट्रियों में विभाग-स्तर पर अपनी-अपनी शिफ्ट में मजदूर अनेक गतिविधियों द्वारा बोझिल-उबाऊ-मनहूस माहौल में ताजगी लाते रहते हैं। यह सामान्य है। मजदूरों द्वारा मिल कर ऐसा करना आम बात है। मजबूरी है रोज एक स्थान पर मिलना-खटना और ऐसे में भी कितने रचनात्मक, कितने क्रियेटिव हो जाते हैं सामान्य मजदूर यह चौंकाने वाली बातें हैं। लेकिन, फैक्ट्री-स्तर होते ही अधिकतर मजदूरों को साँप सूँघ जाता है......

कई फैक्ट्रियों, पूरे औद्योगिक क्षेत्र के अखाड़ा बनने पर नेता सक्रिय और मजदूर दर्शक..... जबकि उत्पादन-प्रक्रिया आज इस प्रकार गुँथ गई है कि फैक्ट्रियों, औद्योगिक क्षेत्रों के मजदूरों के बीच तालमेल प्राथमिक आवश्यकता बन गये हैं।

मिल कर कुछ करने के लिये एक-दूसरे को जानना आवश्यक है। जानने के लिये मिलना जरूरी है। फैक्ट्री में विभाग स्तर पर एक शिफ्ट के मजदूर रोज मिलते हैं। इसलिये कई कमाल करते हैं। इससे आगे के लिये.....

फैक्ट्रियों में विभाग से बाहर के मजदूरों से नियमित तौर पर मिलना-बात करना बहुत मुश्किल है। उत्पादन कार्य में लगे मजदूरों का ड्युटी के दौरान अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से मिलना सम्भव नहीं है। ऐसे में 12-16 घण्टे ड्यूटी और कमरों पर टी वी.....

*कहते हैं कि पेरिस में हजारों क्लबों में मिलते मजदूरों ने पेरिस कम्यून की रचना की थी जो कि नई समाज रचना की दिशा में आज, 140 वर्ष बाद भी महत्वपूर्ण है। इधर एक वर्ष के दौरान हम ने ओखला (तेखण्ड), गुड़गाँव (कापसहेड़ा), आई एम टी मानेसर (रामपुरा) और फरीदाबाद में मिलने के स्थान के जुगाड़ किये। बैठक के रूप में निवास स्थानों पर कमरे किराये पर लिये हैं। दस मिनट साथ बैठने, नियमित बैठ कर एक-दूसरे को जानने, आपस में तालमेल स्थापित करने, मिल कर एक-दूसरे की छोटी-छोटी परेशानियाँ दूर करने के पहले कदम पर भी हम बढ नहीं पाये हैं। हमारे बहुत-ही सीमित साधन इसका एक कारण हैं और कुछ अन्य कारणों का हम ने ऊपर जिक्र किया है। बैठकों...... मजदूर क्लबों की आवश्यकता अब हमें और भी ज्यादा लगती है। सुझावों और साझेदारी का स्वागत है।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

**अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। * बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। * बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है। महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

फरीदाबाद में मजदूर

पी पी रोलिंग मिल मजदूर : "प्लॉट 39 व 43 सैक्टर-27 सी तथा 12/6 मथुरा रोड़ (भास्कर एस्टेट) स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। रविवार को शिफ्ट बदलती है इसलिये दिन में ही 12 घण्टे काम। सत्तर प्रतिशत से ज्यादा मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं और कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती कियों को काम करते 5 वर्ष से ज्यादा हो जाते हैं तब उनकी ई.एस.आई. व पी.एफ.। हैल्परों की तनखा 2800-3500 रुपये. .... इस वर्ष फरवरी में तनखायें बढवाने के लिये मजदूरों ने ओवर टाइम करना बन्द किया। पहले दिन भास्कर एस्टेट वाली फैक्ट्री के गेट पर ताला लगा कर कम्पनी ने मजदूर रोके। सैक्टर-27 सी वाली फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा ओवर टाइम बन्द किये एक सप्ताह हो गया तब चेयरमैन ने कहा कि घाटा है, दो महीने बाद अच्छा कर देंगे। अप्रैल में तनखायें बढाई – अब हैल्परों की तनखा 4348 रुपये और दो वर्ष पुराने ऑपरेटरों की 4900 रुपये।"

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइज श्रमिक : "31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। यहाँ स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, 650 वरकर चार ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। पावर प्रेस विभाग में काम करते 300 मजदूरों की ही ई.एस.आई., पी.एफ. तथा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूँनतम वेतन हैं। वैल्डिंग के लिये तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 350 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्पॉट वैल्डिंग वाले हैल्परों की तनखा 3500-3800 और कारीगरों की 4000-4200 रुपये। मिग वैल्डिंग वाले हैल्परों की तनखा 3800-4000 और कारीगरों की 4500-6500 रुपये। श्रम विभाग, ई.एस.आई., पी.एफ. अधिकारियों के कभी आने की चर्चा मजदूरों में पाँच वर्ष में नहीं हुई है – टैक्स वालों के छापे की बातें हुई थी। सब मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, स्टाफ को डेढ की दर से। सब मजदूरों को लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। मारुति सुजुकी से ऑडिट आती रहती है – मजदूरों से बात नहीं करते, हैल्मेट-चश्मा-एपरेन-मास्क ही देखते लगते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले मजदूरों को तनखा 7 तारीख को लेकिन बाकी 350 को हर महीने देरी से, जून की तनखा 18-20 जुलाई को दी।"

जे आर एन इन्डस्ट्रीज कामगार : "प्लॉट 2 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में दिन की 12½ घण्टे और रात की 11½ घण्टे की दो शिफ्टों में वाहनों के शाफ्ट तथा गियर बनते हैं। रविवार को दिन में काम। तनखा 4000 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सुपरवाइजर व मैनेजर गाली देते हैं, डायरेक्टर केबिन में बुला कर धमकाता है। शौचालय गन्दे हैं।"

आर एस इन्टरप्राइज वरकर : "गुरुकुल औद्योगिक क्षेत्र में प्लासर इंडिया के पास स्थित फैक्ट्री में **गैब्रियल** के शॉकर तथा उनके गत्ते के डिब्बे बनाते मजदूरों में 10 महिलाओं की तनखा 3000 और 60 पुरुषों की 3500 रुपये। महीने में 50 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 17 के ही। शॉकर प्लान्ट में पाइप काटती ट्रॉब मशीन में एक महिला मजदूर का सिर आ गया। उपचार में एक लाख खर्च के बाद नौकरी से निकाल दिया। गत्ता प्लान्ट में पंचिंग मशीन से एक महिला मजदूर की उँगली खराब हो गई, साल-भर बाद उसे नौकरी से निकाल दिया।"

लखानी मजदूर : "प्लॉट 122 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करती 300 महिला मजदूरों तथा 500 पुरुष मजदूरों को जून की तनखा आज 16 जुलाई तक नहीं दी है। मई माह के ओवर टाइम के पैसे भी 16 जुलाई तक नहीं दिये हैं।..... लखानी वरदान समूह की प्लॉट 144 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा आज 16 जुलाई तक नहीं दी है।...... कम्पनी की प्लॉट 265 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा आज 19 जुलाई तक नहीं दी है।"

फ्रेन्ड्स ऑटो श्रमिक : "38 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में वाहनों की कमानी बनती हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये 700 मजदूर रखे हैं, काम करते तीन वर्ष हो जाते हैं तब वर्दी-जूते, साबुन, बोनस देने लगते हैं। स्थाई मजदूर 500 हैं। इतने मजदूरों के लिये फैक्ट्री में मात्र तीन शौचालय हैं।"

परी मैकाट्रोनिक्स कामगार : "ई-ब्लाक, गली नं. 5, त्रिखा कॉलोनी, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। पचास मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

पाइनर डिजिटल इंजिनियरिंग वरकर : "प्लॉट 76 सैक्टर-58 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

शशि सर्विस मजदूर : "प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों की तनखा 2300 रुपये, पुरुष हैल्परों की 2500, पेन्टरों की 2800-3000 रुपये। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ **ओरियन्ट** पँखों का काम होता है।"

साइंटिफिक डाइंग श्रमिक : "प्लॉट 165 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3800 और ऑपरेटरों की 4200 रुपये।"

राजहन्स प्रेस कामगार : "प्लॉट 166 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12 पावर प्रेसों पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **श्रीराम होण्डा** जनरेटरों के कवर बनते हैं। रविवार को दिन में 8 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सेन्चुरी पैकेजिंग वरकर : "इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9½ की ड्युटी है और रात 2-3 बजे तक रोक लेते हैं। हैल्परों की तनखा 4200 रुपये, ओवर टाइम सिंगल रेट से, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हफ्ते में एक छुट्टी करने पर साप्ताहिक अवकाश के पैसे नहीं देते। वैसे भी गड़बड़ी कर हर महीने दो-तीन दिहाड़ी खा जाते हैं।"

टुकड़ों में आज – 2

लव आनंद, अज़रा तबस्सुम, शमशेर अली, नीलोफर, लख्मीचन्द कोहली, जानू नागर, नसरीन, राबिया कुरेशी, राकेश खैरालिया, बबली राय ने सुनीता आर्यन के मामा जी की डायरियों से प्रेरित हो कर लिखा 'डायरिस्ट' किस्तों में प्रस्तुत है।

मंगलवार

अनीता का पत्र खो गया।

शुक्रवार

अरुण दिसम्बर की पेयमेंट लाया 800 रुपये।

आज सुबह अनीता को एक पत्र भेजा है। दरअसल, राहें खारिज़ होती हैं राय बाँधने की कोशिश में।

बाकी साधारण है।

सोमवार

10 रुपये में गेहूँ पिसाया।

रात नींद नहीं आयी।

विद्रोह वक्त की परवाह नहीं करते। उलट ज़िदगी जीने वाले हर बात को सीधे-सीधे उलट देते हैं।

अब ड्यूटी 10 से 6 तक है।

बाकी सब साधारण है।

गुरुवार

अरुण की नौकरी छूट गई। वो बोला, "असन्तोष में धड़कता जीवन सन्तोष को हासिल करने के लिये नहीं निकलता।"

औफ था आज। पर जिगर नाथ के न आने से मेरी ड्यूटी लगी।

बाकी सब साधारण है।

शुक्रवार

2 रुपये बस में जाने के, 2 रुपये आने के। 6 बज कर 40 मिनट पे हाज़री लगी। 1 बजे लंच किया। 6:30 बजे हैं। चाय पी, अब डायरी लिख रहा हूँ। जीवन के भावों को खतों-किताबों में तैयार करना दुनिया से टकराना है। बिज़ि लाइफ है।

बाकी सब साधारण है।

शनिवार

सपने कभी याद नहीं बनते, लेकिन ज़िन्दगी के रास्तों पर दूर तक तो ले जाते हैं। आज सुबह नींद से आँख नहीं खुली।

अनूजा के वहाँ गए। शनि बजार से सामान लाया।

बाकी सब साधारण है।

इतवार

42 रुपये फ्राइंगपैन, 8 रुपये सिगरेट, 20 रुपये शराब में। 20 रुपये दूध, लंच 50 रुपये।

आज परस के साथ पहाड़ी पर गया।

इस संसार की सरहदों के आगे भी दुनिया है।

बाकी सब साधारण है।

गुड़गाँव में मजदूर

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : "195 तथा 196 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों ने जून माह की तनखा के लिये 20 जुलाई को दिन की शिफ्ट में 4 घण्टे काम करने के बाद काम बन्द कर दिया। रात को भी कैजुअलों द्वारा 12 घण्टे काम बन्द। कम्पनी ने 21 को काम चलवा दिया था पर युवा मजदूरों ने फिर बन्द कर दिया। कैजुअल वरकरों द्वारा 22 और 23 जुलाई को भी काम बन्द – 24 का रविवार, साप्ताहिक अवकाश.... कम्पनी ने जून की तनखा 25 जुलाई को दी, काम शुरू हुआ। कम्पनी की प्लॉट 292 स्थित फैक्ट्री में भी कैजुअल वरकरों ने 20 जुलाई को काम बन्द किया पर मैनेजमेन्ट ने धमका कर 2 घण्टे बाद काम शुरू करवा लिया.... इस फैक्ट्री में कैजुअल वरकर कम हैं पर फिर भी उन्होंने 21 को पुनः काम बन्द कर दिया – उन्हें जून की तनखा 22 जुलाई को दी। स्टाफ के कुछ लोगों को जून का वेतन आज 28 जुलाई तक नहीं दिया है। ईस्टर्न मेडिकिट की यहाँ चार फैक्ट्रियों में काम करते 700 स्थाई मजदूरों की 8-8 घण्टे की शिफ्ट हैं और इन्हें तनखा 7 तारीख को दे देते हैं। जबकि, कैजुअल वरकर तीन हजार के करीब हैं जिनकी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, और तनखा हर महीने देरी से।"

सबरीना एक्सपोर्ट श्रमिक : "259 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फ़ैक्ट्री में सुबह 9½ काम आरम्भ होता है और महिला मजदूरों को रात 9¼ तथा पुरुष मजदूरों को रात 2 बजे छोड़ते हैं। रविवार को साँय 6 तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। पानी-पेशाब के लिये टोकन लेना जरूरी कर रखा है। फैक्ट्री में पानी की बहुत दिक्कत है।"

धीर इन्टरनेशनल कामगार : "299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा 26 जुलाई को दी। जो मजदूर नौकरी छोड़ गये हैं उन्हें 25 जुलाई को बुलाया था..... पैसे खत्म हो गये कह कर 200 लोगों को लौटाया और आज 28 जुलाई तक पैसे नहीं दिये हैं।"

लक्ष्मी इम्ब्राइड्री वरकर : "गली नं. 2, कापसहेड़ा स्थित फैक्ट्री में 50 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 2500-3000 और ऑपरेटरों को 5500 रुपये। पानी की दिक्कत। शौचालय गन्दा। गाली देते हैं।"

सुरक्षा कर्मी : "461 उद्योग विहार फेज-5 में कार्यालय वाली **सेक्युरिटास** कम्पनी गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्यूटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काट कर, 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 6500-6734 रुपये देते हैं, हवाई अड्डे पर पूर्व-सैनिकों को 7200 रुपये। पे-स्लिप में 34-36 हाजिरी दिखाते हैं, 40 से ऊपर नहीं दिखाते। लगातार 36 घण्टे ड्यूटी हो जाती है तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। रोज दाढी बनाओ, रोज जूते पॉलिश करो, सप्ताह में एक दिन प्रशिक्षण अधिकारी फैक्ट्री में परेड करवाता है, वर्दी-जूते के गार्ड से 1600 रुपये लेते हैं। तनखा हर महीने देरी से, जून की 14 जुलाई को दी।"

स्पार्क एक्सपोर्ट मजदूर : "166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मई की तनखा 22 जून को दी थी और जून की आज 28 जुलाई तक नहीं दी है। तनखा से पी.एफ. की राशि काटते हैं पर छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। गाली देते हैं, मारपीट भी। पीने का पानी गन्दा।"

नवशिखा पोलीपैक श्रमिक : "194 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर, 50 कैजुअल वरकर और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 125 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में प्लास्टिक पाइप बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। शौचालय गन्दे।"

गौरव इन्टरनेशनल, 208 फेज-1, मैनेजर बहुत गाली देता है; **फ्लोलिन्क,** 141 फेज-1, पीने का पानी ही नहीं रहता, बगल से लाने में बहुत सुनना पड़ता है, शौचालय में भी पानी नहीं; **ऋचा ग्लोबल,** 232 फेज-1, आपातकाल में भी छुट्टी नहीं देते और छुट्टी करने पर नौकरी से निकाल देते हैं; **ज्योति एपरेल्स,** 158-159 फेज-1, कैन्टीन नहीं है, पानी गन्दा, गाली.....

आई एम टी मानेसर

जे एन एस मजदूर : "प्लॉट 48 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री के मजदूरों में अधिकतर महिला हैं और उनकी दिन की ड्यूटी है। पाँच सौ पुरुष मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम – महिला मजदूरों को 20 रुपये प्रतिघण्टा और पुरुषों को 17-18 रुपये। ओवर टाइम में गड़बड़ी भी बहुत करते हैं – फरवरी से जून के दौरान किये ओवर टाइम के पैसे आज 23 जुलाई तक 40-50 वरकरों को नहीं दिये हैं। गाली देते हैं। कैन्टीन में भोजन खराब और पानी में कीड़े।"

कुटोन्स श्रमिक : "प्लॉट 17 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में मई और जून की तनखायें आज 23 जुलाई तक नहीं दी हैं। कम्पनी की 30-40 फैक्ट्रियाँ हैं और सब में यही हाल है।"

ओरियन्ट क्राफ्ट कामगार : "प्लॉट 15 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में 25-30 स्थाई मजदूरों को ही वार्षिक बोनस देते हैं, 10-12 ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 2500 मजदूरों को बोनस नहीं देते। इन दो वर्ष तो दिवाली पर मिठाई भी नहीं दी। सुबह 9½ काम आरम्भ होता है और फिनिशिंग विभाग में रोज रात 1¼ बजे तक काम। शनिवार को फुल नाइट, यानी, रविवार सुबह 4¼ तक काम..... और रविवार को ही फिर 11 से साँय 5 बजे तक काम। सिलाई विभाग में ओवर टाइम इतना ज्यादा नहीं – महीने में 100 घण्टे तक। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से, 47-48 रुपये प्रतिघण्टा। लेकिन, पे-स्लिप में ओवर टाइम 14 घण्टे से ज्यादा दिखाते ही नहीं, हों चाहे महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम के। बायर आते हैं उस दिन मास्क देते हैं, फस्ट एड बॉक्स में दवा रखते हैं, वर्दी-सिर पर टोप-दस्ताने-कड़छी से कैन्टीन में अच्छा भोजन देते हैं। कम्पनी को निर्धारित उत्पादन और क्वालिटी, दोनों चाहियें – नहीं दे पाओ तो जाओ।"

रानी पोलीमर्स वरकर : "प्लॉट 87 सैक्टर-8 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 40 इंजेक्शन मोल्डिंग और 22 ब्लो मोल्डिंग मशीनों पर 15 स्थाई तथा दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 350 वरकर **मारुति सुजुकी, यामाहा, होण्डा दुपहिया, होण्डा कार, ओमेगा** के प्लास्टिक के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को भी 12-12 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। शिफ्ट सुबह 7 बजे आरम्भ होती है – कैन्टीन में थाली 30 रुपये में और कम्पनी 12 घण्टे के दौरान एक कप चाय भी नहीं देती। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा – मैनेजिंग डायरेक्टर और उसका बेटा छाती पर खड़े रहते हैं, कहते हैं कि इतने पीस चाहियें।"

दीपक मैनुफैक्चरिंग मजदूर : "प्लॉट 123 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और 8-10 घण्टे की गड़बड़ी भी करते हैं। तनखा से पी.एफ. राशि काटते हैं पर नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते।"

कुरुबॉक्स श्रमिक : "प्लॉट 37 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में अप्रैल से जून की तनखायें आज 23 जुलाई तक नहीं दी हैं।"

सिग्मा मोल्ड एण्ड स्टैम्पिंग कामगार : "प्लॉट 149-150 सैक्टर-5 स्थित फ़ैक्ट्री में 15 स्थाई मजदूरों और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी पर इधर दो महीने से 15 घण्टे की एक शिफ्ट कर दी है। सुबह 7 से रात 10 बजे रोज, रविवार को दोपहर बाद 3½ बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और हर महीने 8-10 घण्टे की गड़बड़ भी करते हैं। एक ठेकेदार कम्पनी छोड़ कर चली गई और तीन वर्ष की पी.एफ. राशि जमा नहीं की। एक मजदूर की ढाई उँगली कटी – एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी, प्रायवेट में इलाज, क्षतिपूर्ति नहीं दी, नौकरी से निकाल दिया है।"

हाईटेक गियर वरकर : "प्लॉट 24-26 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में उपस्थिति भत्ता 2000 रुपये है और महीने में एक छुट्टी करने पर इसमें से 400 रुपये काट लेते हैं। महीने में 200-220 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। इधर जून से कैन्टीन के लिये 200 की जगह 250 रुपये कर दिये हैं।"

(बाकी पेज चार पर)

सुजुकी पावरट्रेन मजदूर : "प्लॉट 1 फेज-3ए सैक्टर-8 स्थित फैक्ट्री में 15 जुलाई को ए-शिफ्ट में एक सुपरवाइजर ने एक स्थाई मजदूर

● 1 अप्रैल 2011 से **दिल्ली सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं : *अकुशल श्रमिक 6422 रुपये (8 घण्टे के 247 रुपये); अर्ध- कुशल श्रमिक 7098 रुपये (8 घण्टे के 273 रुपये); कुशल श्रमिक 7826 रुपये (8 घण्टे के 301 रुपये)* / स्टाफ में दसवीं से कम *7098 रुपये (8 घण्टे के 273 रुपये);* दसवीं पास पर स्नातक से कम *7826 रुपये (8 घण्टे के 301 रुपये)*; स्नातक एवं अधिक : 8502 रुपये (8 घण्टे के 327 रुपये)। दिल्ली सरकार ने घोषणा 26.7.2011 को की है। इसलिये अप्रैल से जून तक के बकाया पैसे मजदूरों द्वारा लेना बनता है। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली—110054

● 1 जुलाई से देय महँगाई भत्ते (डी ए) की घोषणा हरियाणा सरकार ने अगस्त-आरम्भ तक नहीं की है। ऐसे में पहली जनवरी 2011 से **हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन ही लागू हैं जो इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4503 रुपये (8 घण्टे के 173 रुपये); अर्ध-कुशल अ 4633 रुपये (8 घण्टे के 178 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4763 रुपये (8 घण्टे के 183 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4893 रुपये (8 घण्टे के 188 रुपये); कुशल श्रमिक ब 5023 रुपये (8 घण्टे के 193 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5153 रुपये (8 घण्टे के 198 रुपये)*। दिल्ली और हरियाणा में निर्धारित न्यूनतम वेतनों में फर्क के सन्दर्भ में हरियाणा में मजदूरों द्वारा कदम उठाने बनते हैं। इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ ।

चिन्हित नहीं होना, टारगेट नहीं बनना

चीन के ग्वांडोंग प्रान्त में वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाने वाली **डेन्सो** फैक्ट्री के मजदूर। जुलाई-आरम्भ 2010 में एक दिन शिफ्ट आरम्भ होने पर काम करने लगने की बजाय मजदूर फैक्ट्री में घूमने लगे। आठ घण्टे घूमते रहे। प्रबन्धकों ने कार्य आरम्भ करने को कहा पर किसी मजदूर ने ऐसा नहीं किया। अगले दिन भी मजदूरों ने यह दोहराया। यूनियन ने मजदूरों से काम आरम्भ करने का अनुरोध बार-बार किया। मजदूरों ने काम शुरू नहीं किया। कोई नारेबाजी नहीं, कोई भाषण नहीं, कोई हिंसा नहीं। मजदूरों ने किसी को भी नेता पेश नहीं किया। मजदूरों ने अपनी बातें बताने के लिये कम्प्युटर अथवा मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं किया क्योंकि सरकार ऐसे में कहने-बताने वाले का पता लगा सकती है। कागजों पर अपनी बातें लिख कर चिपकाई। हताश मैनेजमेन्ट ने यूनियन को चुनाव करवाने को कहा ताकि कोई तो हो जिससे सौदेबाजी की जा सके। मौन, शान्त मजदूरों ने किसी को नहीं चुना। कम्पनी ने तनखा बढाई। मजदूरों ने काम आरम्भ किया।

आई एम टी मानेसर (पेज तीन का शेष)

का कॉलर पकड़ लिया। मजदूरों ने लाइन बन्द कर दी। लाइन 20 मिनट बन्द रही। फिर लाइन चालू पर उत्पादन कम – 16 जुलाई को 12 बजे तक निर्धारित का 20% उत्पादन ही हुआ। यहाँ इंजन और ट्रान्समिशन प्लान्टों में 480 स्थाई मजदूर, 1500 ट्रेनी और दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 3500 मज़दूर काम करते हैं।''

मार्स श्रमिक : ''प्लॉट 23 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 80 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **होण्डा, बजाज, हीरो होण्डा, मारुति सुजुकी** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। कोई छुट्टी नहीं, रविवार को काम, दीपावली को भी 8-8 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। प्रेशर डाइकास्टिंग की 8 में से 4 मशीनें इधर तीन महीने से बन्द हैं। मशीन है, खराब होनी ही है लेकिन इस पर गाली देते हैं, मारपीट भी। जलना तो आम बात है, इस एक वर्ष में दो मजदूरों के हाथ कटे – एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी, प्रायवेट में उपचार के पैसे तनखा से काट लिये और नौकरी से निकाल दिये। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के 650 रुपये तनखा से काटते हैं पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते।''

मारुति सुजुकी

चाणचक्क काम बन्द कर मानेसर फैक्ट्री में जमे मजदूरों के सम्मुख हर बीतते दिन के साथ मैनेजमेन्ट ज्यादा कमजोर हो रही थी। फिर भी, बिचौलियों के जरिये कम्पनी ने मजदूर-विरोधी समझौते पर हस्ताक्षर करवाये। लेकिन, कागज पर लिखा और वास्तविकता दो अलग-अलग चीजें हैं। मजदूरों को अपनी ताकत का अहसास हुआ है और मैनेजमेन्ट की जकड़ ढीली हुई है।

✱ काम का बहुत ज्यादा बोझ गुड़गाँव फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे युवा मजदूरों के गुस्से में उबाल ला रहा है। उकसा कर हड़ताल करवा कर कुचलने के बाद 2500 स्थाई मजदूरों को नौकरी से निकालने ने गुड़गाँव फैक्ट्री में बचे स्थाई मजदूरों में डर बैठा दिया था जिसे मानेसर फैक्ट्री के युवा मजदूरों ने काफी कम कर दिया है। ऐसे में डरी कम्पनी ने दस वर्ष बाद मतपत्र से यूनियन चुनाव करवाया ताकि स्थाई मजदूरों में प्रभाव वाले लोग सौदेबाजी के लिये उपलब्ध हो सकें। कम्पनी से खुले तौर पर जुड़े लोगों की निश्चित हार मैनेजमेन्ट ने स्वीकारी ताकि स्थाई मजदूरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच विस्फोटक जोड़ बनने में बाधायें खड़ी की जा सकें।

✱ मानेसर फैक्ट्री में मजदूरों ने कम्पनी को रियायतें देने को मजबूर किया है:

– स्थाई मजदूरों को विवाह के लिये 6 दिन की छुट्टी। इस पर भत्ते वाले 8900 रुपये नहीं कटेंगे।

– ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की शिफ्टें बदला करेंगी। शिफ्ट समाप्ति के बाद बचे काम को करने के लिये एक-डेढ घण्टे मज़दूर नहीं रुकेंगे। सी-शिफ्ट में कुछ को सुबह 8½ की बजाय अन्य के साथ 7 बजे ही छोड़ा जायेगा।

✱ स्विफ्ट कार के नये मॉडल में काम ज्यादा है और इसके लिये मानेसर फैक्ट्री में 27 जुलाई को बम्पर विभाग में ठेकेदार के जरिये रखे एक मज़दूर ने अतिरिक्त वरकर माँगा तो सुपरवाइजर ने उसे गाली दी। शिफ्ट इन्चार्ज को शिकायत का असर नहीं। यह बात स्थाई मजदूरों को बताई तो वे विभाग प्रमुख से मिले। साहब बोले कि ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर का पक्ष तुम क्यों ले रहे हो, उसे अभी निकाल देंगे। बात बढी। सुपरवाइजर और शिफ्ट इंचार्ज ने लिखित में माफी माँगी......अगले रोज, 28 जुलाई को 3 बसों में पुलिस पहुँची। चार स्थाई मजदूरों को पुलिस कार्यस्थल से ले गई। इस पर सब विभागों के मजदूर कार्य बन्द कर फैक्ट्री में एक स्थान पर एकत्र हो गये। इधर ए-शिफ्ट के मजदूरों ने काम बन्द किया और उधर कम्पनी ने बी-शिफ्ट के मजदूरों को लाने वाली बसें बन्द कर दी। आसपास रहने वाले मजदूर पैदल और दूर रहने वाले ट्रक आदि से फैक्ट्री पहुँचे। स्थाई मजदूर, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर फैक्ट्री गेट पर। अन्दर नहीं जाने दिया। फिर नोटिस चिपकाया कि बी तथा सी शिफ्ट बन्द रहेंगी। ए-शिफ्ट के मजदूर शिफ्ट समाप्ति के बाद, पौने चार बजे फैक्ट्री से बाहर नहीं निकले। ऐसे में गुडगाँव फैक्ट्री में मजदूरों द्वारा काम बन्द करने की सम्भावना..... कम्पनी को बी-शिफ्ट के मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश करने देना पड़ा। चार मजदूरों को पुलिस गिरफ्तार कर नहीं ले गई। बी-शिफ्ट में भी पौने चार की बजाय 5 बजे बाद उत्पादन आरम्भ हुआ। मजदूरों को भरोसा दिलाने के लिये कम्पनी ने आरोपित चार मजदूरों को फैक्ट्री में घुमाया..... बाद में उन्हें निलम्बित कर दिया और अगस्त-आरम्भ तक वे सस्पैण्ड हैं। कम्पनी स्थिति सामान्य करने की कह रही है और तैयारी कर रही है.... कानपुर में आई टी आई पांडू नगर से मारुति सुजुकी के पर्सनल मैनेजरों ने 128 छात्रों को नौकरी के लिये चुना है (कानपुर से प्रकाशित 'रिक्तियाँ रोजगार समाचार' के 1-15 जुलाई अंक में)।

मजदूरों के लिये जरूरी है कि स्थाई मजदूरों, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों, प्रोजेक्ट ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों, वेन्डरों के मजदूरों के बीच तालमेल बढायें। यह सब मजदूर फैक्ट्री के अन्दर आसपास हैं और रोज मिल सकते हैं। निशाने पर मजदूरी-प्रथा को लेना होगा क्योंकि कम से कम मजदूरों से अधिक से अधिक काम करवाना इसके चरित्र में है। आवश्यकता अपने आसपास वाले मजदूरों के साथ जोड़ बनाना और फैक्ट्री गेटों के पार तालमेलों की है। ऐसे में मैनेजमेन्ट और कम्पनी में भेद करना बाल की खाल निकालने के फेर में पड़ना है और यह स्थाई मजदूरों के लिये भी दलदल है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011